पाठ–1

कबीर

कवि परिचय

जन्म– 1398 ई.

मृत्यु– 1518 ई.

भक्ति की भावना को सामान्य जन की भाषा में अनुभव गम्य बनाने में सिद्ध हस्त भक्त प्रवर कबीर का जन्म काशी के समीप मगहर में बताया जाता है। इनका लालन–पालन एक जुलाहा परिवार में हुआ। कबीर अनपढ़ थे, किन्तु बहुश्रुत थे तथा उनका ज्ञान, अनुभव समृद्ध था। स्वामी रामानंद के उदार विचारों का भी इन पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। कबीर के लिए कविता साध्य न होकर साधन थी। वे सहज अनुभूतियों को बड़े प्रभावशाली ढंग से जन मानस तक पहुँचाना जानते थे। कबीर की वाणी में सच्चे हृदय से स्वानुभव से कही गयी बात श्रोता के हृदय पटल पर अमिट प्रभाव छोड़ती है। कबीर सच्चे समाज सुधारक थे।

ठीक निशाने पर चोट करने की कला में कबीर अद्वितीय हैं। कठिन से कठिन विचार को भी वे बहुत सटीक उपमा, दृष्टान्त और अन्योक्ति द्वारा बड़े हृदय स्पर्शी ढंग से समझाते हैं। कबीर धार्मिक संकीर्णता को दूर करने वाले एक समाज सुधारक के रूप में हमारे समक्ष हैं। राम और रहीम की एकता के माध्यम से धार्मिक मतान्तरों से ऊपर मानवता की स्थापना का शंखनाद कबीर के काव्य से प्रारम्भ होता है। बाह्याचार, अन्धविश्वास और रूढ़ियों से मुक्त सामाजिक समरसता की स्थापना का सन्देश कबीर के काव्य में मिलता है।

रचनाएँ–

कबीर के अनपढ़ होने के कारण उनकी रचनाओं का संकलन शिष्यों द्वारा किया गया है, जिसमें सबसे प्रामाणिक 'बीजक' है।

पाठ परिचय–

संकलित साखियों एवं पदों के माध्यम से गुरु की महिमा, ईश्वर का स्वरूप, आत्मा–परमात्मा की ऐक्यता, धार्मिक आडम्बर का खण्डन, धार्मिक एकता, आचरण की पवित्रता आदि पर कबीर के विचारों की सरल व सहज अभिव्यक्ति है। इनमें जीवन को निष्कपटता से जीने, संसार की निस्सारता का उल्लेख, प्रेम की व्यापकता और आवश्यकता, जीवन को निष्कपट कर्म भाव से उच्चता की ओर ले जाने का सन्देश प्राप्त है।

इनके माध्यम से वर्तमान परिवेश प्रसूत भौतिकता के द्वन्द्व में भटक रहे मानव जीवन को सच्ची दिशा प्राप्त हो सकती है। कबीर के मानवतावादी और प्रासंगिक रूप का जीवन्त रूप से दिग्दर्शन संकलित पाठ के माध्यम से होता है। कबीर के भाषा पर अधिकार एवं बोधगम्य रूप का पर्याप्त परिचय प्राप्त होता है। काव्य रूप से भाषा के सधुक्कड़ी स्वरूप की प्रामाणिकता होती है।

कबीर

सतगुरू की महिमा अनन्त, अनन्त, किया उपगार ।
लोचन अनन्त उघाड़िया, अनन्त दिखावन हार ।।
भगति भजन हरि नाँव है, दूजा दुक्ख अपार ।
मनसा वाचा कर्मना, कबीर सुमिरन सार ।।
पोथि पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोई ।
ढाई आखर प्रेम का, पढै सो पंडित होई ।।
ऊँचे कुल क्या जनमियाँ, जे करणी ऊँच न होई।
सोवन–कलस सुरै भरया, साधौ नींद्या सोइ ।।
ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोई।
औरन कूँ सीतल करै, आपै सीतल होई।।
कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूंढै बन मांहिं ।
ऐसै घटि घटि राम हैं, दुनिया देखै नाहिं ।।
निंदक नियरे राखिये, आँगन कुटी छवाय ।
बिन पानी साबन बिना, निरमल करै सुभाय ।

पद

मोको कहाँ ढूढे बंदे, मैं तो तेरे पास में,
ना मैं देवल ना मैं मसजिद ना काबे कैलास में,
ना तो कौने क्रिया–कर्म में, नहिं योग बैराग में ।
खोजी होय तो तुरतै मिलिहौ, पल भर की तलास में,
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सब स्वाँसों की स्वाँस में ।।1

भाई रे! दुई जगदीश कहाँ ते आया, कहुँ कवने भरमया।
अल्लह–राम करीमा केसो, हजरत नाम धराया ।
गहना एक कनक तें गढ़ना, इनि महँ भाव न दूजा।
कहन–सुनन को दुर करि पापिन, इक निमाज, इक पूजा।।
वही महादेव वही महंमद, ब्रह्मा–आदम कहिये ।
को हिन्दू को तुरुक कहावै, एक जिमीं पर रहिये।।
वेद कितेब पढ़े वे कुतुबा, वे मोलाना वे पाँडे ।
बेगरि–बेगरि नाम धराये, एक मटिया के माँडे।।
कहँहि कबीर वे दूनौ भूले, रामहिं किनहुँ न पाया।। 2

शब्दार्थ

उपगार– उपकृत,
बांसुरि– रात,
साधौ– सज्जन,
उघाड़िया– खोलना,
बदत– मानना,
बरिंया– इस बार,
पंडित – ज्ञानी, विद्वान,
आखर– अक्षर,
सुरै–शराब,
लोचन–नेत्र
कुल– खानदान
नींद्या– निंदा करना,
सुमिरन–स्मरण,
मुआ–मर गया,
कनक– स्वर्ण
देवल– मन्दिर,

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. कबीर के मत से मीठे वचन क्यों बोलने चाहिए?
   (क) सुनने वाले प्रभावित होते हैं ।
   (ख) मन को शान्ति प्रदान करते हैं ।
   (ख) अहंकार दूर होता है।
   (घ) सम्मान प्राप्त करने के लिए ।
2. कबीर ने संसार के दुःखों से बचने का क्या उपाय बताया है?
   (क) मन्दिर–मस्जिद जाना (ख) दूसरों की निंदा करने को
   (ख) वेद कुरान पढ़ने को (घ) भगवान के नाम स्मरण को

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

3. कबीर के अनुसार गुरु ने क्या उपकार किया है?
4. कर्म की महिमा बताने कबीर ने क्या उदाहरण दिया है?
5. कबीर ने हिन्दू मुसलमान की क्या–क्या उपासना पद्धति बतायी है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

6. ''ढाई आखर प्रेम का'' साखी के माध्यम से कबीर ने क्या सन्देश दिया है?
7. कबीर ने ''घटि –घटि राम'' को किस प्रकार समझाया है?

निबन्धात्मक प्रश्न

8. '' खोजी होय तो तुरतै मिलिहौ'' के आधार पर ईश्वर की अनुभूति के उपाय लिखिए।
9. कबीर ने ईश्वर के एकेश्वरवादी स्वरुप को किस प्रकार स्पष्ट किया है?
10. पठित अंश के आधार पर आधुनिक सन्दर्भ में कबीर की प्रासंगिकता किस प्रकार है ? समझाइए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तर माला

1. ख
2. घ